युद्ध और शांति

टोनी

युद्ध और शांति

शायद हम कुछ ऐसा चाहते हों, जो हमारे पास न हो.
कई बार हम किसी बात पर दूसरों से असहमत होते हैं.
या हमें लोगों पर भरोसा नहीं होता.
या फिर उस दिन हम बिस्तर से उल्टे उठे होते हैं.
लेकिन, इसमें किसी और की भी गलती हो सकती है.
शायद उन्होंने ही इसकी शुरुआत की हो.
हम शायद ऐसा ही सोचेंगे.

आमतौर पर हमें लड़ाई-झगड़े की कोई जरूरत नहीं पड़नी चाहिए.
फिर भी हम कभी-कभी एक-दूसरे से क्यों लड़ते-झगड़ते हैं?

ऐसे परिवार भी होते हैं, जिनमें पूरी सहमति होती है.
वे आपस में शांति से चर्चा करते हैं.
वे एक-दूसरे की बात ध्यान से सुनते हैं.
वे दूसरों की बातें समझने की कोशिश करते हैं.
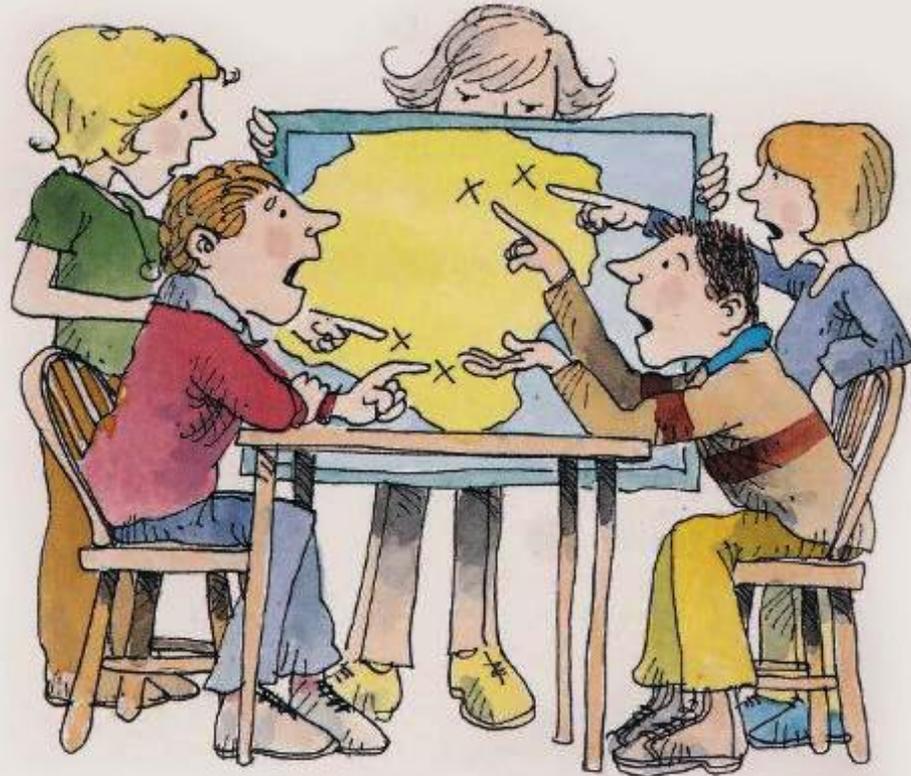
अंत में, वे एक ऐसे निर्णय पर पहुंचते हैं,
जिससे सभी खुश होते हैं. वे आपस में लड़ते नहीं हैं.
अगर वे लड़ते हैं, तो जल्दी से आपस में सुलह भी कर लेते हैं.
क्योंकि वे एक-दूसरे का सम्मान करते हैं
और एक-दूसरे से प्यार करते हैं.
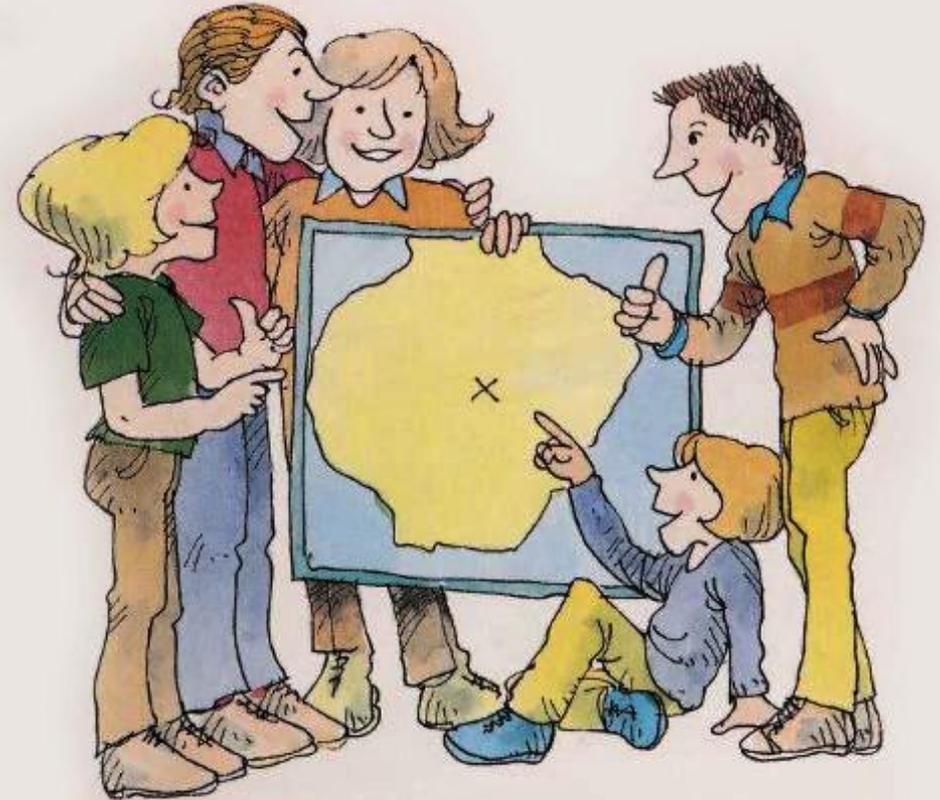
वो परिवार, जहाँ लोग हर समय एक-दूसरे से बहस करते हैं,
वे भी आमतौर पर एक साथ खड़े होते हैं ....
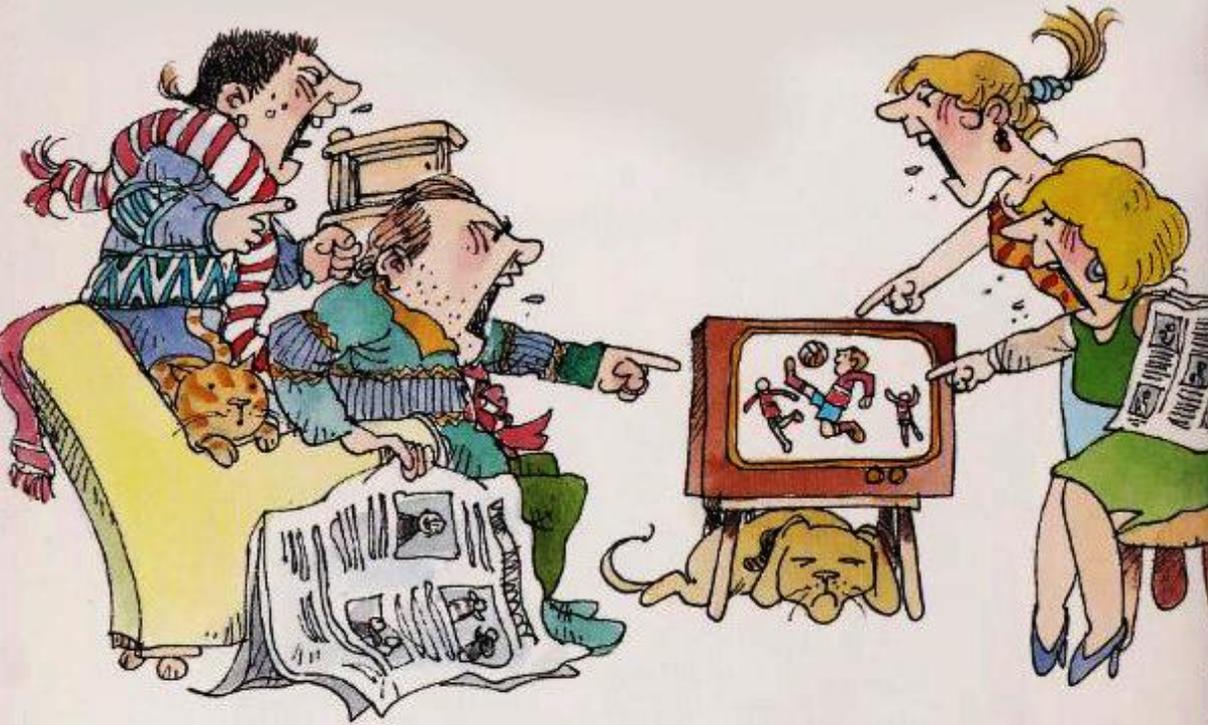
.... खासकर जब परिवार को कोई खतरा हो.
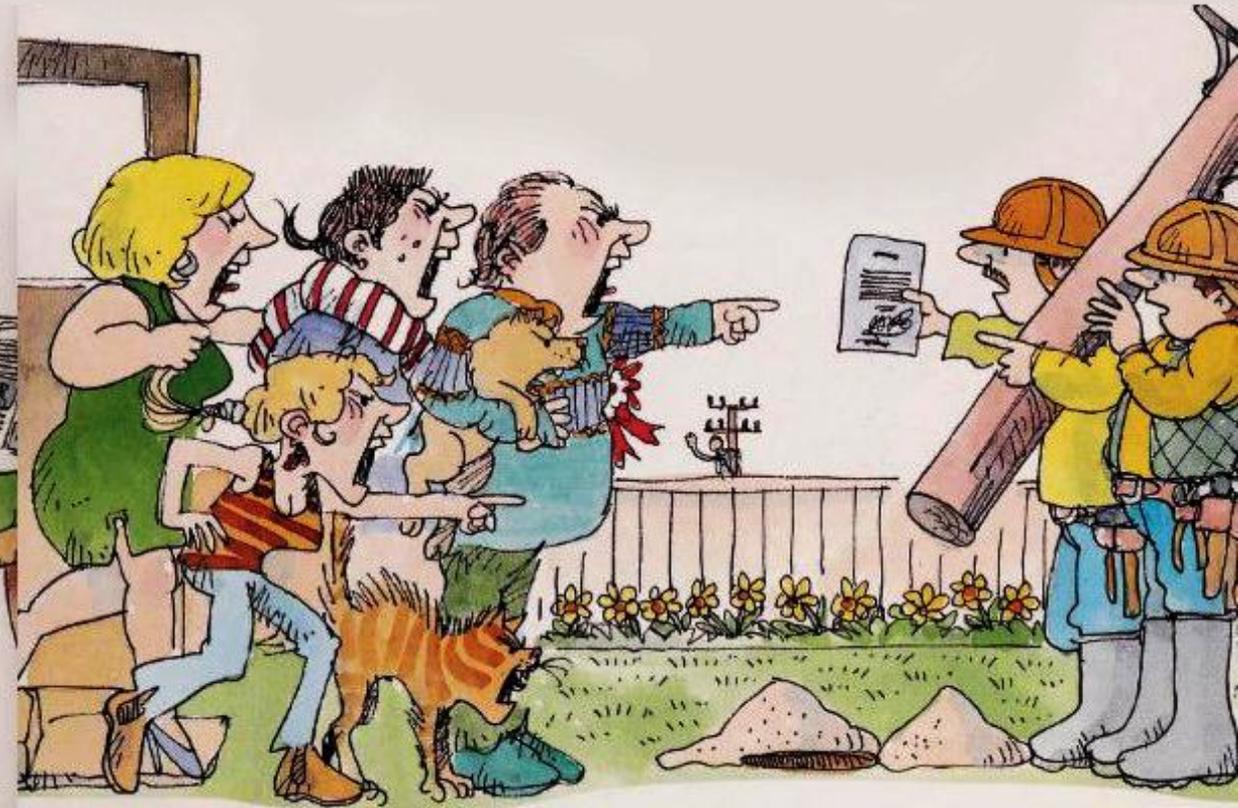
लोगों के समूहों के साथ भी कुछ-कुछ ऐसा ही होता है.

जो लोग एक-साथ काम करते हैं, खेलते हैं या जिनके हित या विचार समान होते हैं, वे प्रतिद्वंद्वी समूहों के खिलाफ तुरंत एकजुट हो जाते हैं.

वे किसी बड़े उद्देश्य के लिए अपने प्रतिद्वंद्वियों के साथ भी हाथ मिलाकर, बड़े दुश्मन के खिलाफ मोर्चा तानते हैं.

राजनीतिक दलों और राष्ट्रों के साथ भी ऐसा ही होता है.

लोग अपने नेताओं का समर्थन करते हैं.

हम में से प्रत्येक यह सोचता है कि वो सही है.

परिवार, समूह, राजनेता और राष्ट्र भी सोचते हैं कि वे सही हैं.

जब राष्ट्र आपस में लड़ते हैं, तो लोग अपने-अपने झंडे, वर्दी, मान्यताओं,
इतिहास, परंपराओं और संस्कृति के पीछे एकजुट होकर खड़े होते हैं.
लोग अपनी-अपनी सेनाओं का समर्थन करते हैं.

यदि हम दूसरे पक्ष को देख पाते,
तो हम उन्हें भी वैसा ही व्यवहार करते हुए पाते.
क्योंकि वे भी हमारे जैसे ही हैं.

यदि हम केवल दूसरे पक्ष की बातों को सुनते,
तो हम बिना लड़े ही
समस्याओं को चर्चा करके हल कर पाते.

यदि हम गर्म दिमाग से काम करेंगे, तो संघर्ष ज़रूर होगा.

लड़ाई पर लड़ाई, अपमान पर अपमान, झूठ पर झूठ!

शत्रु से घृणा और खुद पर गर्व करने से
शत्रुता की लपटों को और हवा मिलती है.
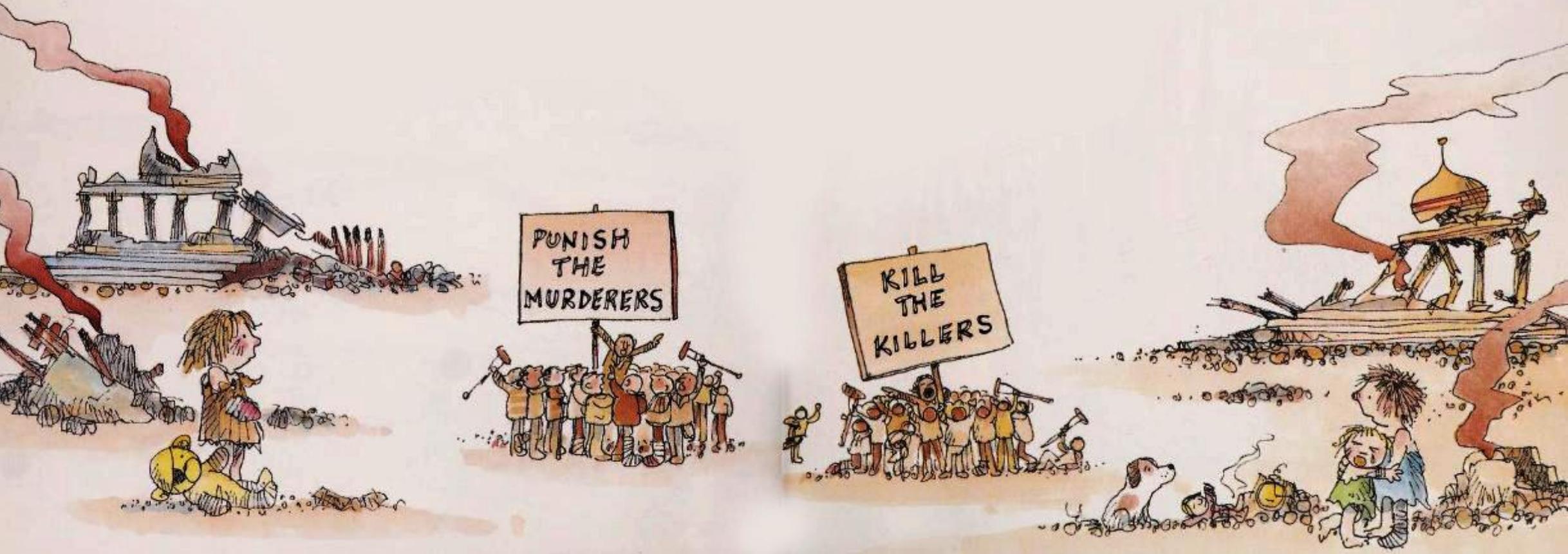
पूरे इतिहास में, राष्ट्रों ने
संपत्ति, भूमि और गुलाम
हथियाने के लिए दूसरों
पर युद्ध किये हैं.

इससे कुछ राष्ट्र मजबूत बने.
उन्होंने महान साम्राज्य बनाए.
विजय ने उनके युद्ध को
सही ठहराया.

पर उससे कई नस्लें और सभ्यताएं
सदा के लिए मिट गईं.
और यह सिलसिला अभी भी ज़ारी है.
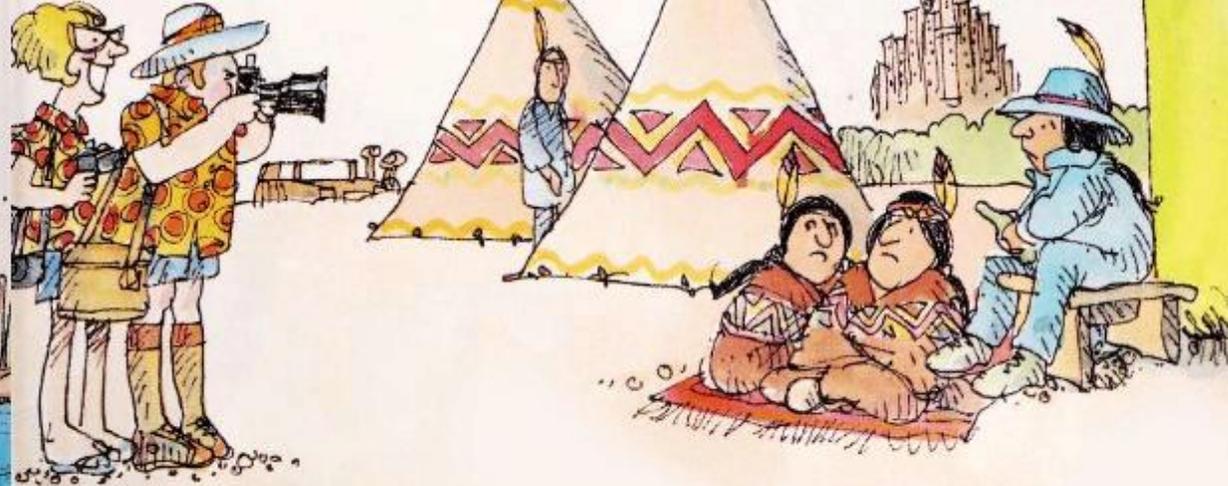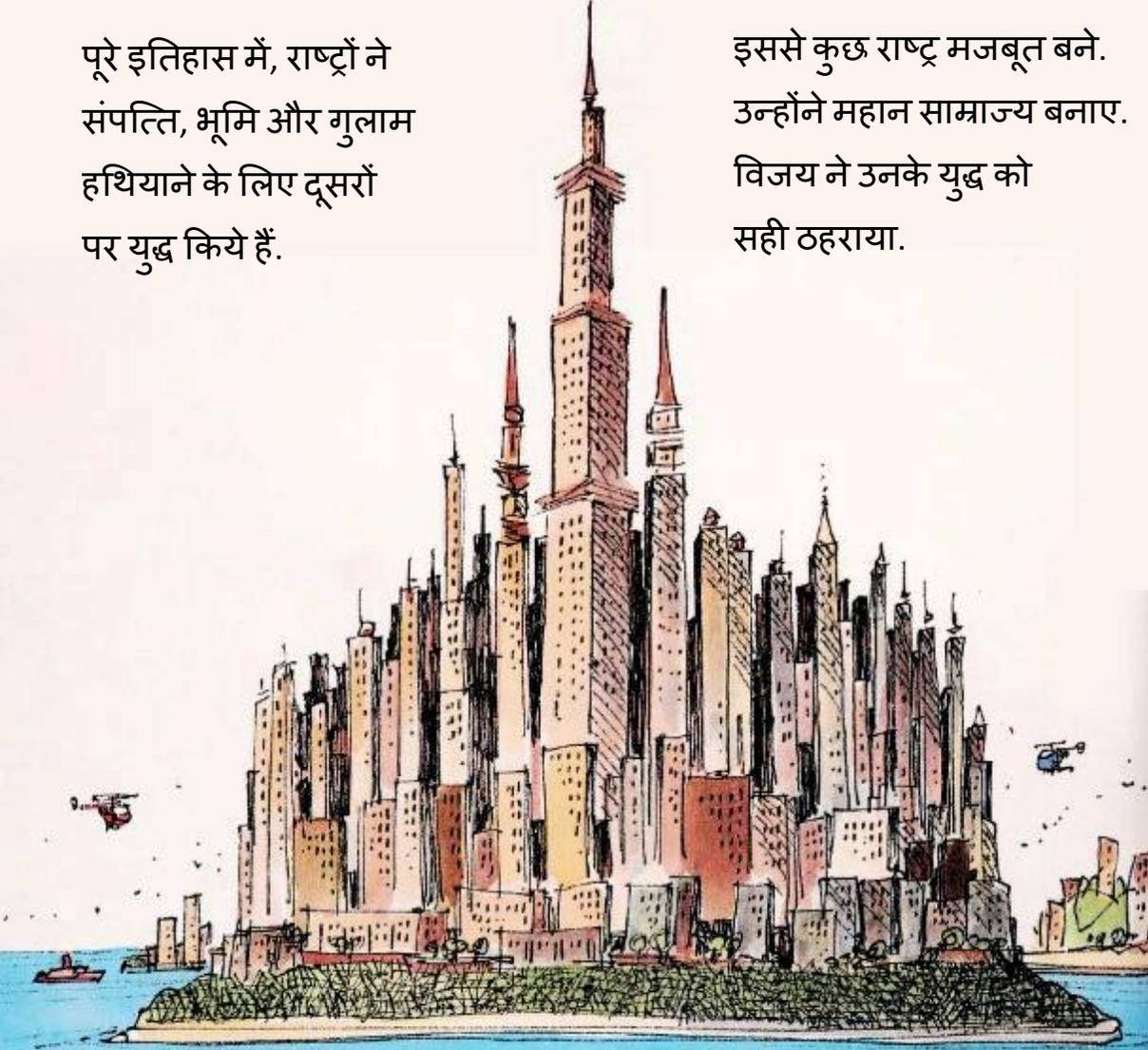
आजकल हथियार इतने विनाशकारी हो गए हैं,
कि युद्ध का कोई मतलब ही नहीं बचा है.
आज युद्ध में कोई भी जीत नहीं सकता है.

सैनिक अब उन लोगों को नहीं
देखते, जिन्हें वो मारते हैं.
अब उन्हें सिर्फ एक बटन
दबाना पड़ता है.

युद्ध पिछली पीढ़ियों की प्रगति को नष्ट करता है.
युद्ध लोगों और सभ्यताओं के सपनों
और आकांक्षाओं को कुचलता है.
क्या यह पागलपन नहीं है?
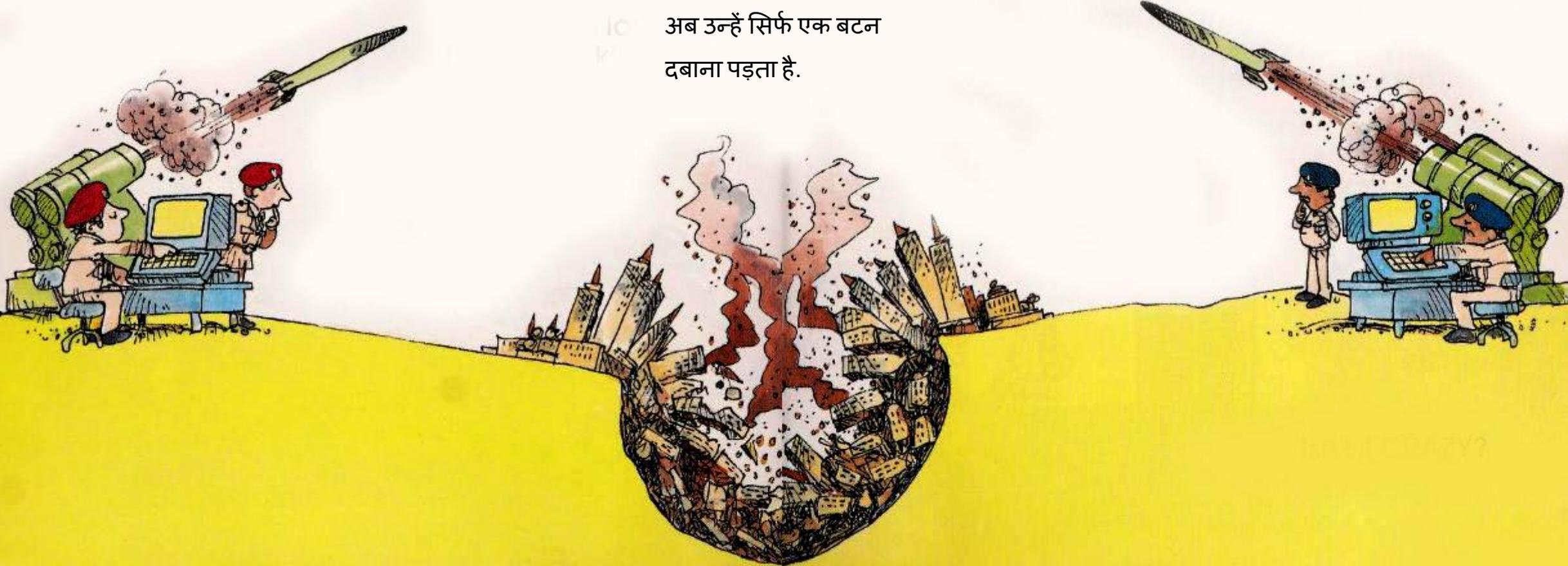
हार, किसी भी देश को सबसे अधिक दुखदाई होती है.
लेकिन, जीत के बाद भी हमें कड़वे सच को स्वीकारना पड़ता है.
पीछे मुड़कर देखने पर हमें साफ़ पता चलता है,
कि कौन सही था और कौन गलत.
हमारे देश ने भी तमाम गलतियाँ कीं हैं, खासकर जब हमने युद्ध
अपने देश से कहीं दूर लड़ा हो. उस वजह से वर्षों बाद, हम अभी
भी खुद को दुखी, क्रोधित, कटु और दोषी महसूस करते हैं.

THE OLD ENEMIES NEVER AGAIN
·REUNION·

हम बार-बार फिर वही गलतियाँ क्यों दोहराते हैं?
हम इतनी तत्परता से युद्ध क्यों लड़ते हैं?
हम खतरनाक नेताओं को हथियार क्यों सप्लाई करते हैं?
हम सही समय पर सही सवाल क्यों नहीं पूछते?
खतरा बने रहने तक हरेक देश को
युद्ध के लिए तैयार रहना पड़ता है.
हम में से प्रत्येक को कभी इस प्रश्न का जवाब देना ही पड़ेगा.
अगर यह पागलपन नहीं, तो और क्या है!
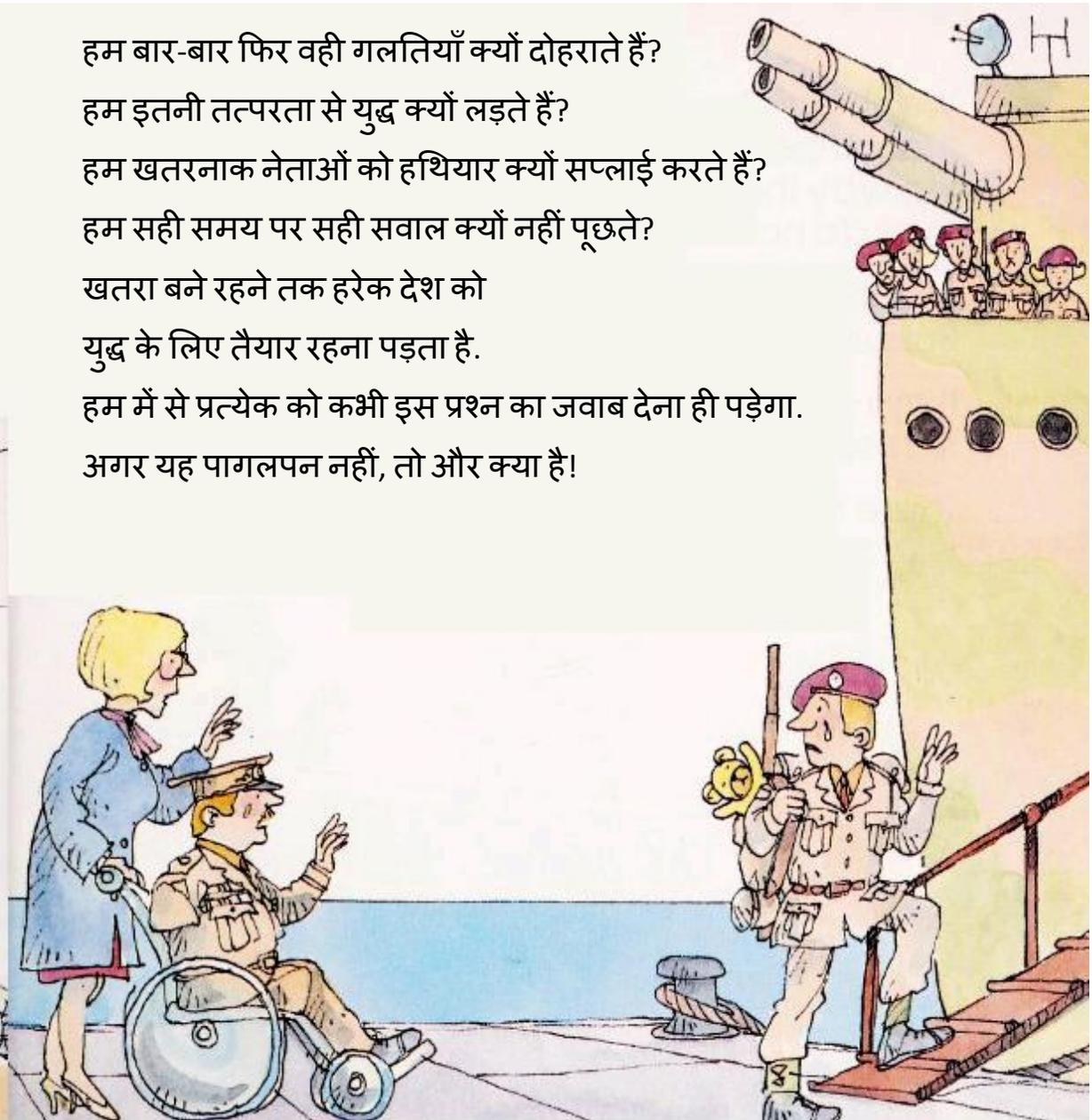
हम जानते हैं कि लोगों को तब तक अपनी इच्छानुसार जीने का अधिकार होता है, जब तक वे दूसरों के अधिकार खतरे में नहीं डालते. अन्य लोगों की समस्याओं की आलोचना करना आसान होता है. लेकिन जब अपने देश की आलोचना करने की बारी आती है, तब हम क्यों कतराते हैं? शांति से विवादों को सुलझाने में राष्ट्रों को, सदियों का समय लग सकता है. शायद अब एक विश्व सरकार बनाने की आवश्यकता है. एक ऐसी विश्व सरकार जिसके पास पर्याप्त सैन्य शक्ति हो.

शक्तिशाली राष्ट्र, हथियारों की संख्या पर नियंत्रण कर सकते हैं. कमजोर राष्ट्र हथियार नहीं खरीदने का निर्णय ले सकते हैं. इससे शांति बनाए रखने वाले बलों को, आपसी दुश्मनों को, अलग-अलग रखने में आसानी होगी.
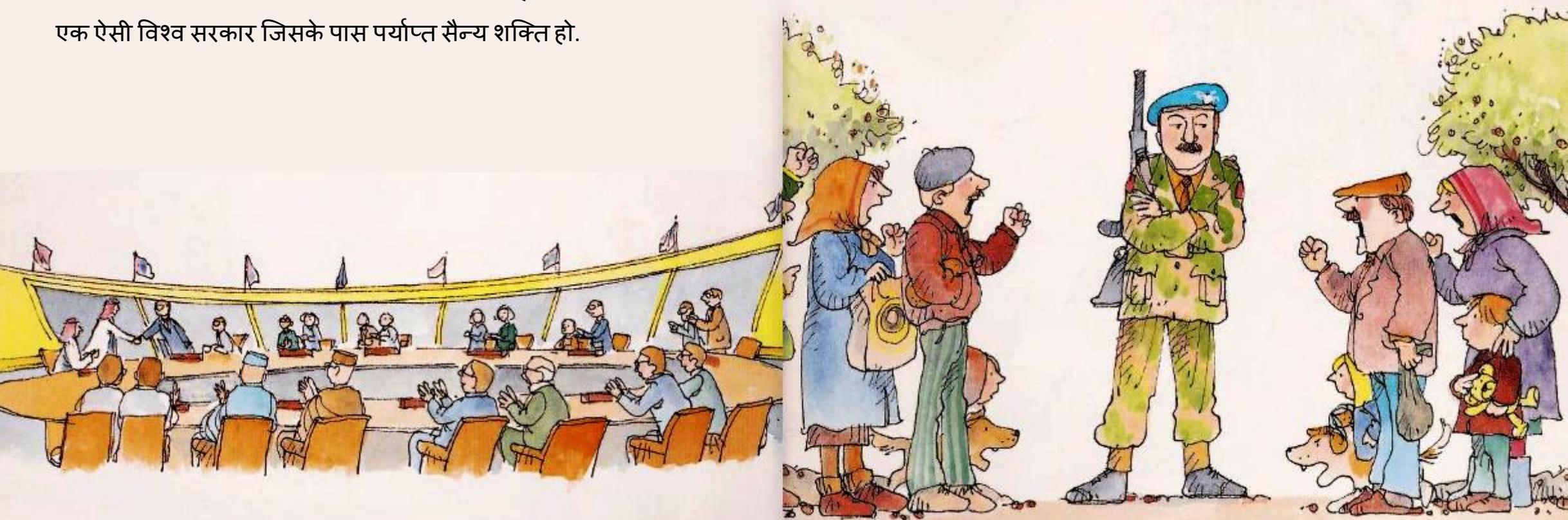
युद्ध के बिना, दुनिया की कल्पना करना भी कठिन है.

ऐसे तीन तरीके हैं जिनसे राष्ट्र एक-दूसरे से लड़ने से बच सकते हैं.

पहला, किसी सामान्य दुश्मन के खिलाफ सब राष्ट्रों का एकजुट होना - जैसे अंतरिक्ष से आया कोई दुश्मन.
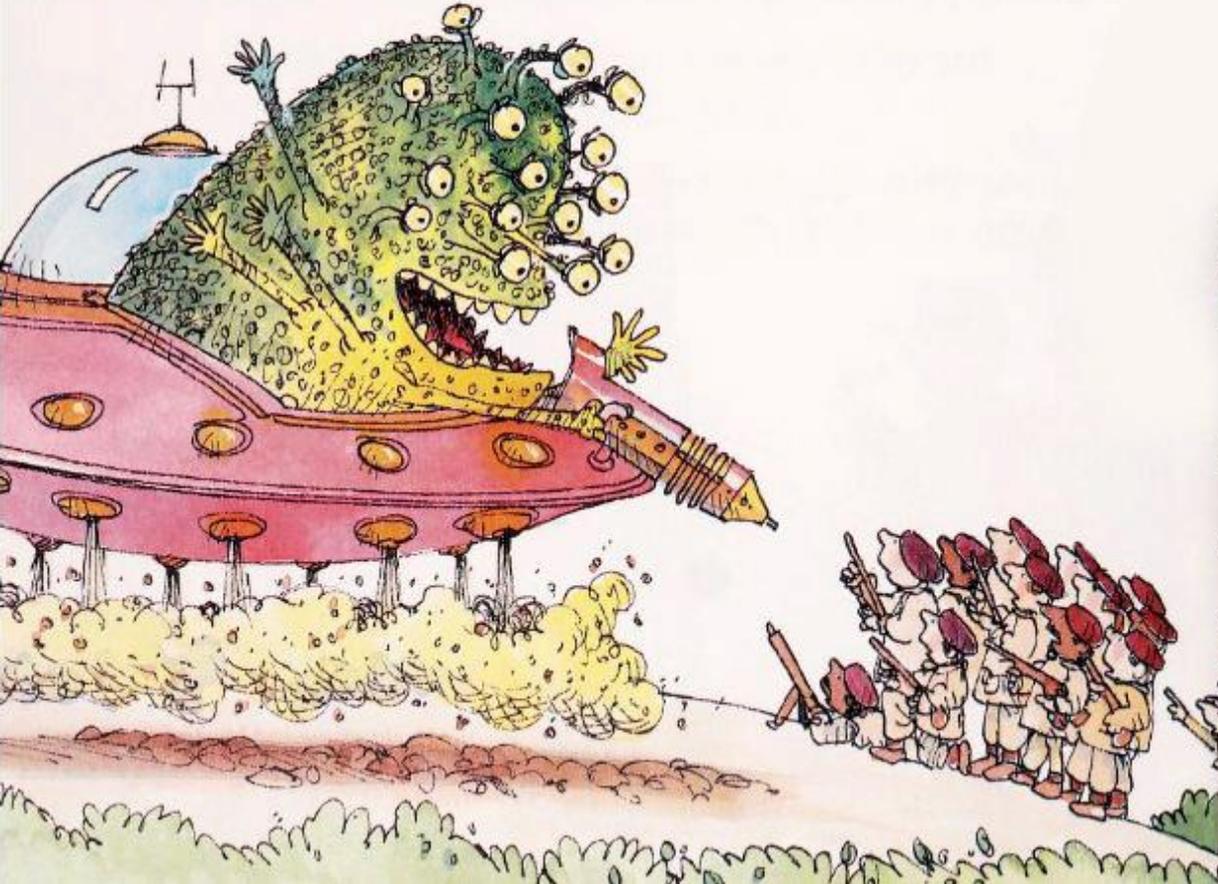
दूसरा - मानव स्वभाव में बदलाव, जब लोगों का लड़ाई से मन भर जाए. पर इसकी संभावना बहुत कम है:

तीसरा तरीका अकल्पनीय है: लोगों द्वारा एक-दूसरे का पूरी तरह खात्मा. .

युद्ध - मानव बलिदान और वीरता का सर्वोच्च उदाहरण है.

लेकिन लड़ने से मना करने पर कितने लोगों को कायर करार दिया जायेगा?

यह कितनों को कबूल होगा?

जब कोई उचित कारण से लड़ रहा हो, तो वो जीतने की उम्मीद करेगा,

वो माफी नहीं मांगेगा.

दुश्मन को कौन माफ करेगा?

नेताओं पर सवाल उठाने की किसमें हिम्मत है?

इसलिए, शांति स्थापित करने से

युद्ध करना ज़्यादा आसान होता है.
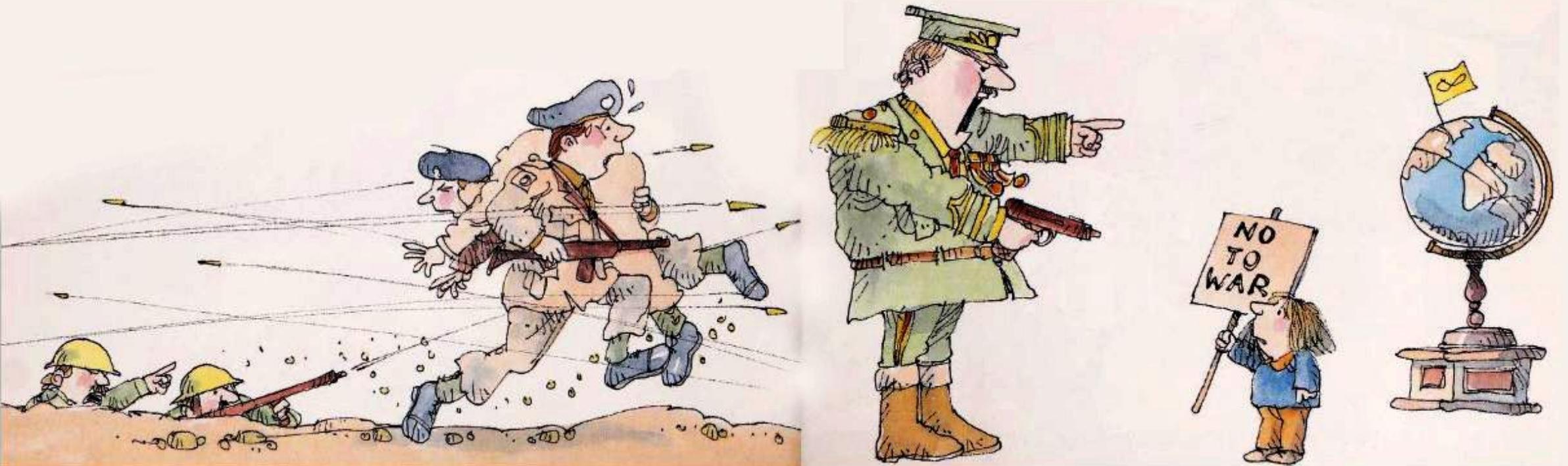
एक शांतिपूर्ण दुनिया में, जब सभी देश और लोग -
मित्र, पड़ोसी और परिवार एक-साथ रहेंगे,
तब हम जैसे साधारण लोग भी हीरो बन सकते हैं ...

...और तब हम भूख, गरीबी और बीमारी पर
जीत हासिल करने का आनंद ले सकते हैं.

लेकिन यह सच्चाई देखने के लिए हम देशों,
समूहों या परिवारों का इंतजार नहीं कर सकते.
इसकी शुरुआत हममें से हरेक को खुद करनी होगी.
हमारी संख्या हमारे सोच से कहीं अधिक है.
हम दूसरों को मनवा सकते हैं.
चलें, इसके बारे में कुछ करें! अभी!
हम लोग शांति से रहें.
अपनी खुशियों-दुखों को दुनिया के साथ सांझा करें.

समाप्त

यदि हम शांति चाहते हैं,

तो हमें उससे खुद शुरू करना होगा.